संगीत शिक्षा सभी के लिए

संतोष राज के

जब हम सही योजना और सन्दर्भगत चर्चाओं के साथ कक्षा में संगीत का उपयोग करते हैं तो यह माध्यम विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति करने, सीखने और कुछ नया पता लगाने में बहुत सहायक होता है। यही नहीं, इससे समावेशन के प्रति जागरूकता और उसे लागू करने की असीम क्षमता का निर्माण भी होता है। इस लेख में कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनमें विद्यार्थियों में विभिन्न सन्दर्भों में समावेशिता की मानसिकता विकसित करने की क्षमता का पता लगाया।

जेंडर सम्बन्धी पूर्वाग्रह को सुधारना

लोक संगीत के कार्यक्रमों में (कम-से-कम राजस्थान में) यह देखा गया है कि महिलाएँ वाद्य यंत्र बजाने की अपेक्षा गाने या नृत्य करने में अधिक भाग लेती हैं। विशेष रूप से, जब ताल वाद्य (जैसे– ड्रम) बजाने की बात आती है तो इन्हें चुनने का झुकाव लड़कों की ओर नज़र आता है। इसपर शायद किसी का ध्यान नहीं जाता।

लेकिन सामान्य कक्षा अवलोकन और प्रदर्शनों में जहाँ लय और सुर (पिच, नोट्स) की पहचान से जुड़ी दक्षताओं का लगातार मूल्यांकन और संकलन किया जाता है, उनमें जेंडर प्रतिनिधित्व डेटा बताता है कि ऐसी भी लड़कियाँ हैं जिनमें लय की बहुत अच्छी समझ है, और वे ताल वाद्य (जैसे– तबला, ढोल, आदि) बजाने में असाधारण रूप से अच्छी हैं।

मैंने देखा कि कई लड़कियाँ ड्रम बजाने में रुचि रखती हैं, इसलिए हमने यह सुनिश्चित किया कि लड़कों की तरह ही लड़कियाँ भी अपने कौशल स्तर के आधार पर इसमें भाग ले सकें। इसपर कक्षा में भी चर्चा की गई, और विद्यार्थियों को आश्वस्त किया गया कि यदि वे अच्छा अभ्यास करें तो उनके जेंडर पर ध्यान दिए बिना उन्हें प्रदर्शन करने का अवसर दिया जाएगा। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एक मिश्रित जेंडर समूह ने समुदाय के सदस्यों के लिए एक संगीतमय कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इससे स्कूल के कामकाज के अन्य क्षेत्रों में जेंडर सम्बन्धी चर्चा को बढ़ाने, और धीरे-धीरे मानसिकता बदलने के इरादे को भी बल मिला।

गीत दीवार

हमारी कक्षाओं में यह सुनिश्चित किया जाता है कि विद्यार्थियों को गायन का अनुभव मिले, और वे विभिन्न भाषाओं के गीतों से परिचित हों। इसके लिए मैं अपनी कक्षा में 'गीत दीवार' का इस्तेमाल करता हूँ। अँग्रेज़ी, हिन्दी, मारवाड़ी, मलयालम, मराठी, गुजराती, पंजाबी और तमिल भाषाओं में गाने लिखे जाते हैं।

चित्र 1 : लड़की हो या लड़का, ड्रम कोई भी बजा सकता है

पढ़ने और समझने में सहायता के लिए उन्हें लिप्यन्तरण के साथ प्रदर्शित किया जाता है। चार्ट पर गाने के बोल बोल्ड टेक्स्ट में लिखे जाते हैं। इन्हें गाने के खण्डों, जैसे पद्य, कोरस, आदि के अनुसार रंग-कोडित किया जाता है ताकि ये आसानी से समझ में आ सकें। ज़ाहिर है, दृश्य सामग्री होने के कारण विद्यार्थियों को इससे सीखने में सहायता मिलती है। और, चूँकि बच्चे बड़ी आसानी से इन्हें जब चाहे देख सकते हैं, इसलिए गीत दीवार उन्हें अपनी गति से सीखने में भी मदद करती है।

समूह प्रदर्शन

अधिकांश विद्यार्थियों के लिए, गायन और वाद्य यंत्र बजाना एक मज़ेदार गतिविधि है। लेकिन यदि उनमें से कुछ को यह पसन्द न हो तो उन्हें सहायक भूमिकाओं में शामिल किया जाता है। जैसे– रंगमंच की सामग्री (प्रॉप्स) तैयार करना, उनका प्रबन्धन करना, आदि।

एक संगीत नाटक के लिए हमने जो मुख्य विचार चुना, वह था– ''भारत अपनी सभी भाषाओं में मौजूद ज्ञान के कारण समृद्ध है।'' हमने तमिल, मराठी, मारवाड़ी और संस्कृत जैसी कुछ भाषाओं से दोहे या पंक्तियाँ चुनीं, उन्हें उनकी मूल भाषा में लिखा, और साथ ही देवनागरी लिपि में उनका लिप्यन्तरण भी किया ताकि सभी विद्यार्थी उन्हें पढ़ सकें। हमने उनके लिए सरल धुनें तैयार कीं, और एक लघु नाटक के माध्यम से उनका अर्थ प्रस्तुत किया।

अपनी जड़ों से जुड़ना

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत के कई पहलू हैं। इनमें से एक इसका समृद्ध संगीत है। बाड़मेर ज़िला बहुत विशाल है, और यहाँ विभिन्न धार्मिक एवं सम्प्रदायी पृष्ठभूमि के अनेक लोक संगीतकार हैं, इसलिए संगीत की इस पहचान को यहाँ काफ़ी बढ़ावा मिलता है।

लोक संगीत, इसकी जड़ों, विषयों और महत्त्व पर चर्चा करते समय, कई विद्यार्थी अपने गाँव, अपने परिवार / समुदाय के समारोहों, आदि में सुने गए गीतों का उल्लेख करते हैं। उन्हें इन गीतों को प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाता है ताकि वे अपने संगीत का अभ्यास कर सकें, और उसके बारे में जानकारी पा सकें।

हमने हाल ही में विद्यार्थियों को एक वृत्तचित्र *इंडस ब्लूज़* दिखाया। इसमें राजस्थान और पाकिस्तान में फैले सिन्धु क्षेत्र के कई समुदायों के बारे में जानकारी दी गई है। स्क्रीनिंग के बाद एक विद्यार्थी ने अपने दादाजी के बारे में बात की जो लोक वाद्य यंत्र 'अलगोजा' बजाते हैं। इसके साथ ही, उसने अपने घर और सामुदायिक समारोहों में इसे सुनने के अपने अनुभव भी साझा किए। एक अन्य विद्यार्थी ने वाद्य यंत्र 'मुरली बीन' के बारे में बताया, जिसे त्योहारों के दौरान उसके गाँव की सड़कों पर सुना जा सकता है।

इस तरह से साझा जड़ों से जुड़ने से निम्नलिखित बातों में मदद मिलती है :

- विद्यार्थी सकारात्मक रूप से अपनी और एक दूसरे की सांस्कृतिक प्रथाओं को समझते हैं, और उनकी सराहना कर पाते हैं।
- शिक्षक के लिए यह सम्भव हो पाता है कि वे स्थानीय समुदायों से संगीतकारों को आमंत्रित करें, और विद्यार्थियों एवं कलाकारों के बीच रचनात्मक चर्चाएँ करवाएँ।
- इससे अपनेपन की भावना पैदा होती है, और आपसी सम्बन्ध मज़बूत होते हैं।

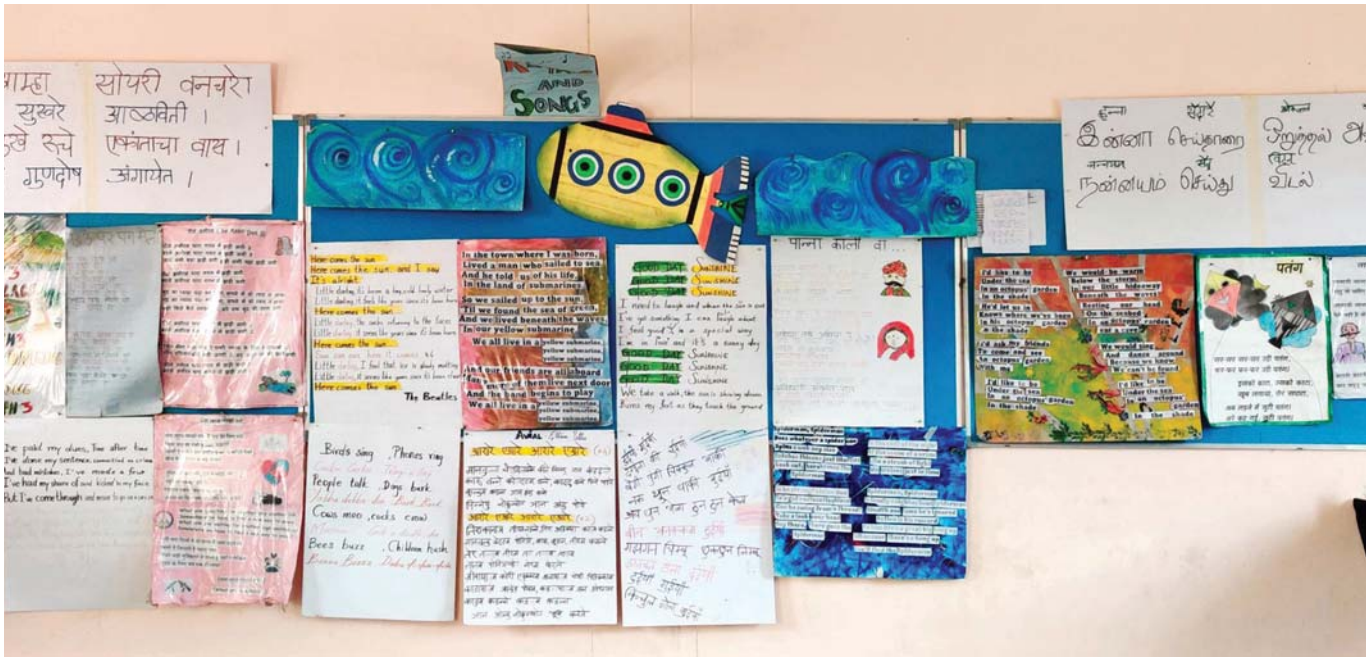

चित्र 2 : बच्चों द्वारा बनाई गई गीत दीवार

जिस क्षेत्र में पुरानी पीढ़ियाँ लगातार धर्म और जाति के आधार पर कलंकित की गई और हाशिए पर धकेली जाती हैं, वहाँ इस प्रकार की अन्तःक्रियाओं से विद्यार्थियों को जो समझ प्राप्त होती है उससे उन्हें समावेशन की दिशा में आगे बढ़ने में सहायता मिलती है। इस बात के काफ़ी उदाहरण आसपास ही देखने को मिल जाते हैं। समाज में कितने ही तरह के भेदभाव हो लेकिन कला व संगीत ने हमेशा सबको जोड़कर रखा है। इसमें सांस्कृतिक विरासत की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

कोई भी पीछे न छूटे

जिन विद्यार्थियों को सीखने की कठिनाइयाँ हैं या कोई शारीरिक अक्षमता है, वे संगीत की कक्षा में साथ-साथ सीखने में आसानी से भाग ले सकते हैं। अन्य विषयों की तरह उनकी ज़रूरतें अलग हो सकती हैं, लेकिन जो शिक्षक इनके प्रति संवेदनशील और जागरूक हों वे अपनी गतिविधियों को इस तरह से अनुकूलित कर पाएँगे कि विद्यार्थी भी उनमें सक्रिय रूप से भाग ले सकें।

उदाहरण 1 : मैं एक ऐसी गतिविधि आयोजित करता हूँ जिसमें विद्यार्थियों से कहा जाता है कि वे अपनी आँखें बन्द करें, ध्यान से लाइव / रिकॉर्डेड संगीत सुनें, और अपनी पसन्द के हिसाब से कोई ऐसी कल्पना करें जो उन्हें संगीत से जोड़ती हो। इसके बाद उन्हें अपने विचार और कल्पनाएँ साझा करने का समय दिया जाता है। एक समूह में एक ऐसा विद्यार्थी है जिसे सुनने की मशीन (कॉक्लियर इम्प्लांट) लगा है। इस विद्यार्थी को बोलने में भी कठिनाई होती है। वह बेहद सक्रिय है, और कक्षा में बहुत रुचि लेता है। इसलिए अन्य विद्यार्थी उसके उत्साह की सराहना करते हैं ताकि वह अपने विचारों को साझा कर सके। वे उसकी बातें बड़े ध्यान से सुनते हैं, और उसके शब्दों को समझने की कोशिश करते हैं। यदि कोई शिक्षक ऐसी गतिविधियों को सुगम बना सकें, और उनका मार्गदर्शन कर सकें तो विद्यार्थी ख़ुद ऐसी समावेशिता लाने लगते हैं जो अपेक्षाओं से कहीं अधिक होती है।

उदाहरण 2 : ध्यानाभाव एवं अतिसक्रियता विकार (ADHD) या स्वलीनता (ASD) वाले विद्यार्थियों को अकसर एक सामान्य कक्षा में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। अपने शुरुआती अवलोकनों में भी हम यह देख पाए कि ऑटिज़्म से पीड़ित फ़ाउण्डेशनल स्टेज का एक विद्यार्थी संगीत की कक्षा में लम्बे समय तक शान्तिपूर्वक बैठने लगा था।

ये अवलोकन महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनसे हमें दैनिक गतिविधियों और सीखने में सभी बच्चों को शामिल करने के लिए कक्षा व शिक्षण पद्धति विकसित करने की महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है। संगीत शिक्षण में समावेशी तरीक़ों को लाना सम्भव है, और अपनी कक्षाओं में हमें इसके महत्त्व को समझना चाहिए। समावेशन के कुछ घटक ऐसे हैं जिन्हें संगीत शिक्षा के माध्यम से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है, वहीं कुछ ऐसे हैं जो जटिल हैं। लेकिन अगर स्कूल के शिक्षकों में आपसी सहमति व समझ हो, और भली भाँति तैयारी की जाए तो यह सम्भव है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

सन्तोष राज के अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर में संगीत और अँग्रेज़ी के शिक्षक हैं। उन्होंने तमिल और तेलुगु भाषा की कई फ़िल्मों में सहायक संगीत प्रोग्रामर / गिटारिस्ट के रूप में और 'मेक ए डिफ़रेंस' के साथ एड-सपोर्ट स्ट्रैटेजिस्ट के रूप में काम किया है।

सम्पर्क : santhosh.kumaravel@azimpremjifoundation.org